Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

मलिन बस्तियों में महिलाओं की जीवन गुणवत्ता का समाजशास्त्रीय अध्ययन

श्रीमती मायादेवी सकठू

सहायक आचार्य,समाजशास्त्र विभाग

आर्य महिला पी0 जी0 कॉलेज,शाहजहाँपुर

सारांश

जीवन की गुणवत्ता का आशय किसी भी व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे; रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन की सुविधा तथा जीविका के लिए रोजगार के साधनों की उपलब्धता की स्थिति से है। मलिन बस्तियों में अक्सर बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है, वे अत्यधिक भीड़भाड़ वाली और प्रदूषित होती हैं। आवासीय कमी, जलापूर्ति की कमी, आवागमन तथा दूषित जल–मल निकासी व्यवस्था का उचित प्रबन्ध न होना, मलिन बस्तियों के मुख्य लक्षण हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में लखनऊ नगर में स्थित मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः मलिन बस्तियाँ, महिलाएँ, जीवन गुणवत्ता, शहरी गरीबी

प्रस्तावना

जीवन की गुणवत्ता का आशय किसी भी व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे; रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन की सुविधा तथा जीविका के लिए रोजगार के साधनों की उपलब्धता की स्थिति से है (कुलमी, 2019)। पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वस्त्र तथा साफ–सुथरा आवास मानव की कार्य क्षमता एवं जीवन को सुचारू रूप से सक्रिय रखने के लिए न्यूनतम एवं वांछनीय आवश्यकताएं हैं (कुमार, 2018)। आजादी के सात दशक पूर्ण होने के उपरान्त भी वर्तमान में देश के लगभग 15 प्रतिशत परिवार आवास से वंचित हैं, 60 प्रतिशत से अधिक घरों में रोशनी और हवा की सुविधा अपर्याप्त है और 80 प्रतिशत ग्रामीण

तथा 30 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या मूलभूत सुविधाओं से वंचित कच्चे मकानों में रहती है। लाखों व्यक्तियों को अत्यधिक किराया देना पड़ता है, जो उनके साधनों से परे होता है।

नगरों में मलिन बस्तियों का निर्माण अवैध रूप से गृह निर्माण तथा निम्न आर्थिक स्थिति होने के कारण दयनीय जीवन–यापन के साथ होता है। इन बस्तियों के घर कच्चे होते हैं, जो घास–फूस या मिट्‌टी के बने होते हैं। इनकी छत प्लास्टिक या पॉलीथिन की बनी होती है, तथा कुछ मकानों पर टीन की चद्‌दरों (पतरें) की छत होती है। इन बस्तियों की दूषित जल निकासीं कीचड़ युक्त तथा गन्दे पानी से भरी नालियों द्वारा होती हैं। इन नालियों में मक्खियाँ, मच्छर, कीड़े–मकोड़े तथा कई तरह के हानिकारक जीवाणु पनपते रहते हैं। अतः प्रदूषण युक्त वातावरण से उत्पन्न कई बीमारियाँ यहाँ पाई जाती हैं। यहाँ की गलियाँ तंग तथा कीचड़युक्त होती हैं। वहीं क्षेत्र की सड़कें भी ऊबड़–खाबड़ तथा गड्‌ढ़े युक्त या कच्ची होती हैं। मलिन बस्ति़याँ दयनीय जीवन स्थितियों का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। मलिन बस्तियों में अक्सर बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है, वे अत्यधिक भीड़भाड़ वाली और प्रदूषित होती हैं (घोष & बंधोपाध्याय, 2014)।

हरिंग्टन (1962) के अनुसार मलिन बस्तियों में गरीबी की संस्कृति होती है, जहाँ लोग पराजयवाद और निराशा से पीड़ित होते हैं और स्वंय को सामाजिक प्रगति से निर्वासित मानते हैं। हरिग्टंन मानते हैं कि यदि हम इसे छोटे रूप में देखें तो इनकी भाषा निम्न स्तरीय होती है। इनके विचारों में भी निम्नता (गरीबी) विद्यमान रहती है। संसार के प्रति इनका दृष्टिकोण भी निम्न स्तरीय होता है, जिससे उनमें आन्तरिक अलगाव की भावना पायी है। इसी कारण वे स्वयं की स्थिति को सुधार नहीं पाते हैं। मिलर (1968) का भी मानना है कि इनकी उपसंस्कृति के रूप में गरीबी विद्यमान है। निम्नवर्गीय व्यक्ति भाग्य पर अधिक विश्वास करते हैं, इन्हें ईश्वर पर अटूट विश्वास है। मिलर मानते हैं कि निम्न वर्ग के लोगों में गरीबी की उपसंस्कृति स्वतः ही एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में जाती है।

मलिन बस्तियों में अत्यधिक जनघनत्व, तथा साफ–सफाई, जल निकासी सुविधा, हवादार आवास, पीने के पानी की सुविधा का नितान्त अभाव होता है। आवासीय कमी,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

जलापूर्ति की कमी, आवागमन तथा दूषित जल–मल निकासी व्यवस्था का उचित प्रबन्ध न होना, मलिन बस्तियों के मुख्य लक्षण हैं (गाडगिल, 1959)। ऐसे में वहाँ के निवासियों की जीवन गुणवत्ता का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधपत्र में लखनऊ नगर में स्थित मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य– वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य लखनऊ नगर में स्थित मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नवत् हैं–

- मलिन बस्तियों की उत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषा तथा मलिन बस्तियों में जीवन की गुणवत्ता का सैद्धान्तिक विश्लेषण करना।
- चयनित क्षेत्र में निवास करने वाली महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
- उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य की स्थिति का अध्ययन करना।
- उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।
- उत्तरदाताओं के भौतिक पर्यावरण की स्थिति का अध्ययन करना।
- उत्तरदाताओं के सामाजिक सम्बन्धों का विवेचन करना।

मलिन बस्तियों की उत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषा

सामान्यतः 'मलिन बस्ती' शब्द नगर के उन हिस्सों के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जहाँ भवन जर्जर स्थान, भीड़ भाड़ युक्त तथा जिनमें पुनर्निमाण नहीं किया जा सकता या जिनमें साफ–सफाई, जल निकासी सुविधा, हवादार, पीने का पानी की सुविधा का अभाव हो या जो स्थान स्वयं में रोगग्रस्त होते हैं और परिणामस्वरुप ये स्थान विघटित क्षेत्रों के विशिष्ट रुप होते हैं, फलतः सुरक्षित नहीं होते हैं (जिस्ट & हल्बर्ट, 1945:162)।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

मलिन बस्तियों की बिल्कुल सटीक परिभाषा देना अत्यन्त दुरूह कार्य है। मलिन बस्तियों को किसी विशेष क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों की उत्पत्ति कहा जा सकता है। इनकी विशेषता अलग–अलग क्षेत्रों तथा राष्ट्रों में भिन्न होती हैं। मलिन बस्तियाँ वे स्थान हैं जहाँ के घर प्रदूषित तथा द्वितीयक दर्जे के हैं, वहाँ का स्वास्थ्य स्तर निम्न स्तरीय होता है। सुरक्षा, नैतिकता, सम्पत्ति आदि का वहाँ के निवासियों में अभाव होता है (फोर्ड, 1936:117)। बर्गेल (1965:93) ने मलिन बस्तियों को ऐसे क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया है जहाँ नगर के अन्दर द्वितीयक दर्जे की स्थिति है। एक अच्छा भवन जो तीव्र प्रदूषित स्थिति में अवस्थित है, उपेक्षित है, मलिन बस्ती का निर्माण नहीं करता है।

मलिन बस्तियों की बुनियादी विशेषताएं अपर्याप्त आवास और स्वच्छ हवा प्रवाह की कमी, अत्यधिक भीड़भाड़, अपर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, सुरक्षित पेयजल की कमी और बुनियादी भौतिक और सामाजिक सेवाओं की अनुपलब्धता हैं। मलिन बस्तियों को मलिन बस्तियाँ (सुधार और निकासी) अधिनियम, 1956 की धारा 3 के तहत ऐसे क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ के भवनं किसी भी तरह से मानव निवास के लिए अनुपयुक्त हैं या जीर्ण–शीर्ण, अत्यधिक भीड़भाड़, ऐसे भवनों की दोष पूर्ण व्यवस्था और बनावट, सड़कों की संकीर्णता या दोषपूर्ण व्यवस्था, स्वच्छ हवा, प्रकाश, स्वच्छता सुविधाओं की कमी या इनमें से किसी भी कारक के संयोजन के कारण हैं, जो सुरक्षा, स्वास्थ्य और नैतिकता के लिए हानिकारक हैं।

भारत की जनगणना, 2001 के अनुसार, मलिन बस्ती कम से कम 300 की आबादी या लगभग 60–70 घरों का एक सघन क्षेत्र है, जिसमें खराब तरीके से निर्मित भीड़भाड़ वाले घर हैं, जो अस्वच्छ वातावरण में हैं, आमतौर पर अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे के साथ और उचित स्वच्छता और पेयजल सुविधाओं का अभाव है।

बर्गेस (1925:39) का मानना है कि मलिन बस्तियाँ केन्द्रीय व्यापारिक क्षेत्र के चारों ओर विकसित होती हैं। निम्न आय के कारण मजदूरों को भीड़भाड़ युक्त स्थानीय क्षेत्रों के चारों ओर रहना पड़ता है। नगरीय क्षेत्रों में औद्योगिक क्षेत्र ऐसे केन्द्रीय स्थान हैं जो गरीब ग्रामीण निवासी को कार्यक्षेत्र के चारों ओर रहने का प्रलोभन देते हैं, जिस कारण मलिन

बस्ती का निर्माण होता है (ममफोर्ड, 1961)। इसी तरह क्लीनार्ड (1966) का भी मानना है कि मलिन बस्तियाँ केन्द्रीय व्यापारिक पेटी के चारों ओर विकसित होती हैं।

प्रत्येक सभ्यता के नगरीय विकास में मलिन बस्तियाँ हमेशा से एक समस्या का विषय रही हैं, जहाँ का सामाजिक जीवन नगर की मुख्य धारा से भिन्न होता है। किसी भी मलिन बस्ती का शैक्षिक, आवासीय, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मनोविज्ञान वहाँ के नगरीय विकास के समानुपाती न होकर विलोमानुपाती होता है। यदि नगर अत्यधिक विकसित है तो वहाँ पाई जाने वाली मलिन बस्तियों की संख्या निश्चित रूप से अधिक और मलिन बस्तियों की आबादी न्यूनतम उपलब्ध साधनों में अपने दैनिक जीवन को निर्वाह करने वाली होती है (वर्मा, 2017)।

मलिन बस्तियों में जीवन की गुणवत्ता

विकास के लिए अपनाए जा सकने वाले विभिन्न दृष्टिकोण, विशेष रूप से मानव विकास, जीवन की गुणवत्ता के साथ अत्यधिक सहसंबद्ध हैं (सिंह, 2009)। आज जीवन की गुणवत्ता किसी समाज और उसके विभिन्न स्तरों के सामाजिक–आर्थिक स्वरूप और कल्याण को व्यक्त करने और समझाने के लिए आवश्यक प्रतीत होती है। यह लंबे समय से स्वीकार किया गया है कि प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद द्वारा मापी गई भौतिक भलाई अकेले जीवन की व्यापक गुणवत्ता की व्याख्या नहीं कर सकती है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय बैंकों, संगठनों, मूल्यांकन अभिकरणों, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों और भूगोलवेत्ताओं ने जीवन की गुणवत्ता के मापदंडों की पहचान करने और जीवन की गुणवत्ता सूचकांकों के विकास की प्रक्रिया में रुचि ली। जीवन की गुणवत्ता के महत्व को आधुनिक विचारकों ने हाल ही में, विशेष रूप से पिछली सदी की अंतिम तिमाही में महसूस किया।

यूनेस्को (1977) ने 'जीवन से खुश', 'जीवन की आशा' और 'स्वास्थ्य एवं जीवन की अपेक्षाओं की पूर्ति' को जीवन की गुणवत्ता के प्रमुख संकेतक माना है। शहरी क्षेत्रों में, मूलभूत सुविधाओं तक पहुँच और सेवाओं की निकटता, जीवन की गुणवत्ता के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

विश्व स्वास्थ्य संगठन (1997) द्वारा जीवन की गुणवत्ता को 'किसी व्यक्ति की संस्कृति और मूल्य प्रणालियों के संदर्भ में जीवन में अपनी स्थिति के बारे में धारणा जिसमें वे रहते हैं और उनके लक्ष्य, अपेक्षाएं, मानक और चिंताओं' के रूप में परिभाषित किया गया है।

नगर केंद्र बेहतर सामाजिक–आर्थिक आधारभूत सुविधाओं एवं अवसरों के कारण लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, जिससे धीरे–धीरे नगरों की ओर ग्रामीण और अर्ध–नगरीय क्षेत्रों से प्रवास बढ़ता है। हालांकि, इन प्रवासित लोगों की बड़ी संख्या नगर केंद्रों में बेहतर आवास सुविधाओं को प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो पाती है और इसलिए उन्हें झुग्गी–झोपड़ियों और सुविधाविहीन बस्तियों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ता है (डिसूजा, 1978; कुंडू, 1993)।

मलिन बस्तियों में शिक्षा एवं रहन–सहन की निम्नता के कारण स्थायी व सम्मानजनक रोजगार के अवसर नहीं मिलते हैं, जिससे इन क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के सभी सदस्य किसी न किसी अकुशल कार्यों में लिप्त रहते हैं। मलिन बस्तियों की की अधिकांश महिलाएं व किशोरियाँ घरों की साफ–सफाई, बर्तन साफ करने, कूड़ा बीनने आदि कार्य करती हैं। औद्योगिक इकाईयों वाले शहरों में यह महिलाएं सिलाई, जरदोजी एवं अन्य कम आमदनी वाले कार्यों में भी संलग्न होती हैं। इस प्रकार के कार्यों के दौरान वह आर्थिक, शारीरिक, मानसिक एवं यौनिक हिंसा के जोखिम से रूबरू होती रहती हैं (यादव, 2019)।

प्रत्येक देश की मलिन बस्तियों का अपना स्वरुप होता है किन्तु उनका पर्यावरण और रहने की दशाएं लगभग समान होती हैं। इनमें निवास करने वाले निर्धन, बेरोजगार और कम आय वाले व्यक्ति हैं जिनका न कोई मकान है और न मकान होने की आशा है। यह वह आवासीय अनाथालय है जहाँ मानव जीवन की समस्त असुविधाएं एक साथ देखने को मिलती हैं, जहाँ व्यक्ति पशुओं की तरह जीवनयापन करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

मुखर्जी (1940) ने मलिन बस्तियों को सामाजिक विद्रूपता की पराकाष्ठा बताते हुए कहा है कि मलिन बस्तियों की झोपड़ियों में प्रकाश का अभाव रहता है और इनमें भीड़ बहुत

रहती है तथा इनमें स्वच्छता व पानी की पूर्ति की सुविधायें अपर्याप्त हैं। मुखर्जी (1940:320) ने मलिन बस्तियों में लोगों के चारित्रिक ह्रास के सम्बन्ध में लिखा है कि वहाँ मनुष्य का विध्वंस होता है, स्त्रियों का सतीत्व नष्ट होता है तथा देश के भावी आधार स्तम्भ शिशुओं का गला घुट जाता है।

एण्डरसन (1959:45) ने बर्मिंघम नगर की मलिन बस्तियों के विषय में बताया कि मलिन बस्तियाँ सामान्य रुप से नगरीय पतन के कारण दिखायी देती हैं। मलिन बस्तियाँ एक गरीबी का क्षेत्र होता है, जहाँ पर जनसेवाएँ उपलब्ध नहीं होती हैं। मलिन बस्तियों का क्षेत्र उच्च आवासीय घनत्व, उच्च अपराधिक क्रियाकलापों से युक्त होता है।

गाडगिल (1959) ने पूना में स्थित मलिन बस्तियों की आवासीय समस्या अध्ययन कर बताया कि प्रति कमरे में प्रति व्यक्ति उच्च घनत्व पाया जाना मलिन बस्तियों की जीवन दशा को अधिक बुरा बना देती है।

सेन (1960) ने कलकत्ता की मलिन बस्तियों की विशेषताओं और क्षेत्रीय प्रकार का अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने मलिन बस्तियों में मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की उपलब्धता और आवासीय निर्माण का विश्लेषण किया है।

अब्राहम्स (1964) ने मलिन बस्तियों का अध्ययन कर बताया कि दुनिया के प्रत्येक नगर को मलिन बस्तियाँ बाधित करती है। मलिन बस्तियों की सबसे बुरी स्थिति का कारण वहाँ पर अत्यधिक भीड़भाड़ का होना है। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि इन क्षेत्रों की पहचान भिखारियों द्वारा होती है।

सेनगुप्ता (1980) ने भी कलकत्ता की मलिन बस्तियों के लोगों की आवासीय स्थिति पर अध्ययन किया। इन्होंने बताया कि मलिन बस्तियों में अच्छे जीवन स्तर को उपलब्ध कराने के लिए मलिन बस्ती सुधार कार्यक्रम की योजना चलाकर आवासीय स्थिति में सुधार की आवश्यकता है।

झा & त्रिपाठी (2014) ने वाराणसी नगर की मलिन बस्तियों में जीवन की गुणवत्ता का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इस अध्ययन में अध्ययन क्षेत्र की पाँच मलिन बस्तियों (राजघाट,

आंकारेश्वर, सिगरा, दुर्गाकुण्ड, एवं नगवा) में रहने वाले 150 परिवारों से साक्षात्कार अनुसूची द्वारा जीवन की गुणवत्ता के विभिन्न आयामों (प्रकाश का स्रोत, ईधन, पेयजल का स्रोत, आवास की स्थिति, यातायात व्यवस्था, दूषित मल–जल निकासी की व्यवस्था, स्वच्छता, स्वास्थ्य सुविधाएं, साक्षरता, महिला साक्षरता दर, राशन कार्ड का प्रकर) से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन किया गया है। संकलित सूचनाओं का विश्लेषण जीवन गुणवत्ता संयुक्त सूचकांक, मानक विचलन आदि सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है। साथ ही जीवन की गुणवत्ता की प्राप्त स्थिति को सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों तथा भारत 2020 : एक नई सदी के लिए दृष्टि के लक्ष्यों से तुलना भी की गयी है।

कुलमी (2019) ने इन्दौर शहर की मलिन बस्तियों में निवासरत् गरीबों के जीवन की गुणवत्ता एवं जे0एन0आर0यू0आर0एम0 की प्रभाविकता का अध्ययन किया है। इस अध्ययन में मध्य प्रदेश के इन्दौर नगर की मलिन बस्तियों में रहने वाले 300 परिवारों का दैव निदर्शन विधि से चयन कर उनसे जे0एन0आर0यू0आर0एम0 के अन्तर्गत मिले वैयक्तिक/सामुदायिक लाभ, आवास/आवसीय क्षेत्र की मूलभूत सुविधाओं में सुधार, बच्चों की शिक्षा में सुधार तथा बाल अपराध के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन किया गया है। संकलित आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि अधिकांश (86.3 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के बच्चों की शिक्षा में सुधार हुआ है, जबकि मात्र एक–चौथाई से भी कम (26.3 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के अनुसार मूलभूत सुविधाओं में सुधार होने से बाल अपराध में कमी आई है।

यादव (2019) ने लखनऊ नगर की मलिन बस्तियों में स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण व्यवहार का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र की मलिन बस्तियों में निवास करने वाले समुदायों में भेदभाव एवं बीमार पैदा करने वाले तत्वों की खोज करना है, जो वहाँ के नागरिकों के स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण व्यवहार में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इसके लिए अध्ययन क्षेत्र में स्थित मलिन बस्तियों के 300 परिवारों का दैव निदर्शन की लाटरी विधि से चयन कर साक्षात्कार अनुसूची द्वारा शोध से सम्बन्धित प्राथमिक सूचनाओं का संकलन किया गया है। संकलित आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता

है कि ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति पर सर्वाधिक परिवारों (52.33 प्रतिशत) का विश्वास होने के बावजूद झाड़फूक अथवा तांत्रिक क्रियाओं में 19.33 प्रतिशत परिवारों का विश्वास रखना इनके बीच तार्किक ज्ञान का अभाव दर्शाता है। वहीं दो–तिहाई से भी कम परिवारों के मकान में शौचालय (66.66 प्रतिशत) तथा स्नानागार (63.66 प्रतिशत) की उपलब्धता है। अधिकांश परिवार नवजात शिशु को प्रथम बार खिलाने/पिलाने के सन्दर्भ में आज भी सामाजिक रीतिरिवाजों का पालन करते हैं। स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण स्तर में सुधार लाने हेतु चलाई जाने वाली सरकारी योजनाओं का लाभ मलिन बस्तियों के निवासियों को बहुत कम मिल रहा है।

प्रसाद (2022) ने उ0प्र0 के वाणिज्यिक नगर गाजियाबाद की मलिन बस्तियों में जीवन का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन किया है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि अध्ययन क्षेत्र में आज भी 18 प्रतिशत ऐसे आवास है जो घासफूस, कच्ची ईंटों और गारा से निर्मित है। 40 प्रतिशत आवास एक कमरे वाले हैं और 10 प्रतिशत आवासों में न तो बिजली है, न सुरक्षित पेयजल और न ही शौचालय। उल्लेखनीय तथ्य है कि मलिन बस्तियों में निवास करने वाली कुल जनसंख्या में 35.8 प्रतिशत जनसंख्या ही साक्षर है तथा 24 प्रतिशत जनसंख्या बेरोजगार है। 21 प्रतिशत घर ऐसे जिनकी मासिक आय 500 रू0 प्रति माह से कम है। मलिन बस्तियों में पेयजल की आपूर्ति का प्रमुख स्रोत सरकारी नल है। मात्र 29 प्रतिशत जनसंख्या को सामुदायिक शौचालय की सुविधा उपलब्ध है। सीवर सिस्टम के नाम पर खुली हुई नालियां है जो कूड़ा करकट व सफाई के अभाव में जाम हो जाती है।

नायक & जाटव (2023) ने लखनऊ की मलिन बस्तियों में पेयजल की अपर्याप्त उपलब्धता और खराब गुणवत्ता के साथ–साथ घटिया स्वच्छता और सूक्ष्म–पर्यावरणीय (जल निकासी, सीवरेज और ठोस अपशिष्ट निपटान) सुविधाओं के कारण होने वाली बीमारियों के प्रारूप की जाँच की है। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि सार्वजनिक उपयोगिताओं की सीमाओं के कारण कई जल–जनित और मल–संचारित संक्रमणों के साथ–साथ अन्य संक्रामक रोग भी होते हैं। परिणामस्वरूप, लखनऊ की शहरी आबादी के सबसे गरीब वर्ग, जो मलिन

बस्तियों में रहते हैं, अपने उपभोग व्यय का लगभग एक–तिहाई अपनी जेब से खर्च करते हैं, और इनमें से आधे से अधिक रोग–प्रभावित घरों को सी.एच.एस. (कैनाबिनाइड हाइपरमेसिस सिंड्रोम) का सामना करना पड़ा है।

साक्षी & अन्य (2025) ने लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में जीवन की गुणवत्ता के क्षेत्रीय स्तर का आकलन कर उनका विश्लेषण किया है। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि लखनऊ नगर की मलिन बस्तियों में जीवन स्तर बहुत निम्न है। खराब आवास, स्वच्छता सुविधाओं का अभाव, पेयजल के उचित स्रोतों और स्वतंत्र जल आपूर्ति कनेक्शनों का अभाव, पाइप से जल आपूर्ति का अभाव, अपशिष्ट निपटान की अपर्याप्त सुविधाएँ और घटिया सीवेज प्रणाली, ये सभी प्रदूषण और स्वास्थ्य समस्याओं में योगदान करते हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सेवाओं की निकटता, स्ट्रीट लाइट सुविधाओं का अभाव और संगठनों व सामुदायिक सहभागिता की नगण्य उपस्थिति मलिन बस्तियों में जीवन स्तर पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। मलिन बस्तियों में जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए, लिंग–आधारित नियोजन, मलिन बस्तियों के उन्नयन और मलिन बस्तियों के लिए सहभागी नियोजन जैसी समावेशी योजना पहलों में निजी क्षेत्र और गैर–सरकारी संगठनों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है।

शोध प्रचना– प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक है, जिसमें वर्णनात्मक शोध प्रचना का प्रयोग किया गया है। इसमें प्राथमिक आँकड़ों के संकलन के लिए अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित लखनऊ नगर में स्थित कुल 609 मलिन बस्तियों में से 05 अधिसूचित मलिन बस्तियों (निवाजखेड़ा, श्रमविहार, टेढ़ीपुलिया मलिन बस्ती, विनायकपुर और निशातगंज मलिन बस्ती) का सोद्देश्य चयन किया गया है, तथा प्रत्येक चयनित मलिन बस्ती में निवास करने वाली 35–35 वयस्क महिलाओं (कुल 175 महिलाएं) का दैव निदर्शन की व्यवस्थित विधि से चयन किया गया है। चयनित महिलाओं से साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से शोध विषय से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाओं का संकलन किया गया है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

आँकड़ों का विश्लेषण– प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता के समाजशास्त्रीय अध्ययन हेतु जीवन की गुणवत्ता के पाँच पहलुओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, भौतिक पर्यावरण तथा सामाजिक सम्बन्ध) से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन कर उनका विश्लेषण किया गया है जिसका विवरण निम्नवत् है–

शिक्षा– शिक्षा महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करती है, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जागरूक भी करती है। चयनित उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति निम्नवत् पाई गयी है–

तालिका सं0 1 : उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति

शैक्षिक स्थिति	उत्तरदाताओं का वितरण	
	संख्या	प्रतिशत
उच्च	16	9.14
सामान्य	43	24.57
निम्न	116	66.29
योग	**175**	**100.00**

तालिका सं0 1 से पता चलता है कि सर्वाधिक (66.29 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति निम्न (निरक्षर, साक्षर या प्राथमिक स्तर की शिक्षा) है, जबकि 24.57 प्रतिशत उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर सामान्य (उच्च प्राथमिक या माध्यमिक स्तर की शिक्षा) और मात्र 9.14 प्रतिशत उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर उच्च (उच्च माध्यमिक या अधिक) है।

स्वास्थ्य– महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों में प्रजनन स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, और शारीरिक स्वास्थ्य प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं से उनके सामान्य स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों (बीमार होने की आवृत्ति, गम्भीर बीमारी, चिकित्सा उपाय, परिवार में बीमारी की स्थिति आदि) से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन कर उनका विश्लेषण निम्नवत् किया गया है–

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

तालिका सं0 2 : उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य की स्थिति

स्वास्थ्य की स्थिति	उत्तरदाताओं का वितरण	
	संख्या	प्रतिशत
अच्छी	37	21.14
संतोषजनक	82	46.86
असंतोषजनक	56	32.00
योग	**175**	**100.00**

तालिका सं0 2 से पता चलता है कि सर्वाधिक (46.86 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य की स्थिति संतोषजनक है, जबकि 32.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य की स्थिति असंतोषजनक तथा 21.14 प्रतिशत उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी है।

आर्थिक स्थिति– महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक है। इसके अन्तर्गत रोजगार के अवसर, आय, खर्च, बचत और कार्यस्थल की दशाएं जैसे मुद्दें सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित सूचनाओं का विश्लेषण निम्नवत् किया गया है–

तालिका सं0 3 : उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति	उत्तरदाताओं का वितरण	
	संख्या	प्रतिशत
संतोषजनक	41	23.43
निम्न	58	33.14
अतिनिम्न	76	43.43
योग	**175**	**100.00**

तालिका सं0 3 से पता चलता है कि सर्वाधिक (43.43 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति अतिनिम्न है, जबकि 33.14 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति निम्न तथा 23.43 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति संतोषजनक है।

भौतिक पर्यावरण– भौतिक पर्यावरण के अन्तर्गत उत्तरदाताओं के आवासीय क्षेत्र में साफ–सफाई तथा स्वच्छता की स्थिति, दूषित जल–मल निकासी, हवादार एवं सुरक्षित आवास, शुद्ध पेयजल की उपलब्धता, विद्युत आपूर्ति, सुरक्षा, आवागमन के साधन आदि से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन कर उनका विश्लेषण निम्नवत् किया गया है–

तालिका सं0 4 : उत्तरदाताओं का भौतिक पर्यावरण

भौतिक पर्यावरण	उत्तरदाताओं का वितरण	
	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	22	12.57
संतोषजनक	55	31.43
असंतोषजनक	98	56.00
योग	**175**	**100.00**

तालिका सं0 4 से पता चलता है कि सर्वाधिक (56.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का भौतिक पर्यावरण असंतोषजनक है, जबकि 31.43 प्रतिशत उत्तरदाताओं का भौतिक पर्यावरण संतोषजनक तथा 12.57 प्रतिशत उत्तरदाताओं का भौतिक पर्यावरण अच्छा है।

सामाजिक सम्बन्ध– महिलाओं के सामाजिक सम्बन्ध उनके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इसके अन्तर्गत परिवार में महत्व, मित्र मण्डली, और समाज/समुदाय के साथ सम्बन्धों को सम्मिलित किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के सामाजिक सम्बन्धों के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित सूचनाओं का विश्लेषण निम्नवत् है–

तालिका सं0 5 : उत्तरदाताओं का सामाजिक सम्बन्ध

सामाजिक सम्बन्ध	उत्तरदाताओं का वितरण	
	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	73	41.71
संतोषजनक	68	38.86
असंतोषजनक	34	19.43
योग	**175**	**100.00**

तालिका सं0 5 से पता चलता है कि सर्वाधिक (41.71 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का सामाजिक सम्बन्ध अच्छा है, जबकि 38.86 प्रतिशत उत्तरदाताओं का सामाजिक सम्बन्ध संतोषजनक तथा 19.43 प्रतिशत उत्तरदाताओं का सामाजिक सम्बन्ध असंतोषजनक है।

निष्कर्ष

प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि–

- लगभग दो–तिहाई (66.29 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति निम्न है, अर्थात् वे निरक्षर या मात्र साक्षर हैं, या फिर उन्होंने केवल प्राथमिक स्तर की ही शिक्षा प्राप्त की है, जबकि कुल उत्तरदाताओं के दसवें भाग से भी कम (9.14 प्रतिशत) लोगों ने हाईस्कूल या इससे उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त की है।
- तीन–चौथाई से भी अधिक (78.86 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य की स्थिति असंतोषजनक (32.00 प्रतिशत) या संतोषजनक (46.86 प्रतिशत) है।
- तीन–चौथाई से भी अधिक (76.86 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति अतिनिम्न (43.43 प्रतिशत) या निम्न (33.14 प्रतिशत) है।
- अधिकांश (87.43 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का भौतिक पर्यावरण असंतोषजनक (56.00 प्रतिशत) या संतोषजनक (31.43 प्रतिशत) है। मात्र 12.57 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनका भौतिक पर्यावरण अच्छा है।

- अधिकांश (80.57 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का सामाजिक सम्बन्ध अच्छा (41.71 प्रतिशत) या संतोषजनक (38.86 प्रतिशत) है।

प्राथमिक सूचनाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि चयनित अध्ययन क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं की नितान्त कमी है। वहाँ का भौतिक पर्यावरण अस्वास्थ्यकर तथा भीड़भाड़ युक्त हैं। वहाँ पर रहने वाले अधिकांश परिवार अति गरीब हैं, जिसके कारण वे मँहगी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ प्राप्त करने में असमर्थ हैं। यद्यपि अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं के सामाजिक सबन्ध अच्छे या संतोषजनक हैं, जो यह दर्शाता है कि परिवार के सदस्यों के मध्य और क्षेत्र में परिवारों के बीच सम्बन्ध मधुर हैं। उनमें एकता की भावना प्रबल है, जो सम्भवतः कठिनाईयों से लड़ने हेतु सम्बल प्रदान करती है।

मलिन बस्तियों के अनियंत्रित विकास ने अनियोजित अतिक्रमणों को जन्म दिया है, प्रवासन तनाव, अनौपचारिक रोजगार, अस्वास्थ्यकर वातावरण और नगर प्रशासन के साथ तनावपूर्ण संबंध जैसे मुद्दे शहरी असमानता को और बढ़ा देते हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग एक महत्वपूर्ण मानव संपत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, शहरी जीवन को बनाए रखने वाले श्रम और सेवाएँ प्रदान करते हैं। अतः समाज में उनके संभावित योगदान को मान्यता दी जानी चाहिए तथा मलिन बस्तियों में मूलभूत सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ

अब्राहम्स, सी0 (1964). *मैन्स स्ट्रगल फार सेल्टर इन एन अर्बनाइजिंग वर्ल्ड.* कैम्ब्रिज : एम0आई0टी0 प्रेस.

एण्डरसन, एन0 (1959). *दि अर्बन क्मयुनिटी : ए वर्ल्ड पर्सपेक्टिव.* न्यूयार्क : हेनरी हाल एण्ड कं0.

कुण्डू, ए0 (1980). *मेजरमेंट ऑफ अर्बन प्रासेस : ए स्टडी इन रीजनलाइजेशन.* मुम्बई : पापुलर प्रकाशन.

कुमार, जे0 (2018). ''नगरीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति''. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंस इन्वेंशन, 7*(5): 74–78.

कुलमी, एन0 (2019). ''इन्दौर शहर की गंदी बस्तियों में निवासरत् गरीबों के जीवन की गुणवत्ता एवं जे0एन0आर0यू0आर0एम0 की प्रभाविकता''. *जे0ई0टी0आई0आर0, 6*(5): 333–340.

क्लीनार्ड, एम0बी0 (1966). ''थ्योरीज ऑफ दि स्लम''. इन देसाई, ए0आर0 एण्ड पिल्लई, एस0डी0 (एडी0). *स्लम्स एण्ड अर्बनाईजेशन.* मुम्बई : पापुलर प्रकाशन. पृ0 50–54.

गाडगिल, डी0आर0 (1959). ''हाउसिंग एण्ड स्लम्स इन पूना''. *इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, 11*(14): 486–488.

घोष, एस0 एण्ड बंधोपाध्याय, एस0 (2014). ''क्वालिटी ऑफ लाइफ ऑफ ओल्डर पीपल इन एन अर्बन स्लम ऑफ इण्डिया''. *साइकोजिरिएटिक्स, 14*: 241–246.

जिस्ट, एन0पी0 एवं हल्बर्ट, एल0ए0 (1945). *अर्बन सोशियोलॉजी.* न्यूयॉर्क : थामस वाई0 क्रोवेल कं0.

झा, डी0के0 एण्ड त्रिपाठी, वी0के0 (2014). ''क्वालिटी ऑफ लाइफ इन स्लम्स ऑफ वाराणसी सिटी : ए कम्परेटिव स्टडी''. *ट्रांसेक्शन्स ऑफ दि इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डियन जियोग्राफर्स, 36*(2): 171–183.

डब्ल्यू0एच0ओ0 (1997). *डब्ल्यू0एच0ओ0क्यू0ओ0एल0 : मेजरिंग क्वालिटी ऑफ लाइफ.* जेनेवा, स्विटजरलैण्ड : वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन

डिकिन्शन, आर0ई0 (1964). *सिटी एण्ड रीजन : ए जियोग्राफिकल इंटरप्रिटेशन.* न्यूयार्क : टेलर एण्ड फ्रांसिस.

डिसूजा, ए0 (1978). *दि इण्डियन सिटी : पॉवर्टी, इकोलॉजी एण्ड अर्बन डेवलपमेंट.* नई दिल्ली : मनोहर पब्लिकेशन.

नाथ, ण्न0 (2008). *ग्रोइंग अप इन स्लम्स.* नई दिल्ली : मानक पब्लिकेशंस.

नायक, एस0 एण्ड जाटव, एस0एस0 (2023). ''बेसिक एमिनिटीज, डिफीशिएंशी–इन्ड्यूस्ड ऐलमेंट, एण्ड कैटास्ट्रोफिक हेल्थ स्पेंडिंग इन दि स्लम्स ऑफ लखनऊ, उत्तर प्रदेश''. *इकोनामिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, 58*(11).

प्रसाद, आर0 (2022). ''गाजियाबाद की मलिन बस्तियों में जीवन का सामाजिक आर्थिक अध्ययन''. *जे0आई0आर0सी0जी0एम0ई0, 2*(2).

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

बर्गेस, ई0डब्ल्यू0 (1925). *दि सिटी.* शिकागो : शिकागो युनीवर्सिटी प्रेस.

ममफोर्ड, एल0 (1961). *दि सिटी इन हिस्ट्री : इट्स ओरिजिन, इट्स ट्रांसफारमेशन एण्ड इट्स पर्सपेक्ट्स.* न्यूयार्क : हाउटन मिफलिन हरकोर्ट.

मिलर, जे0डब्ल्यू0 (1968). *डेवलपिंग रूरल इण्डिया, प्लान एण्ड प्रैक्टिस.* न्यूयार्क : कोरनेल यूनिवर्सिटी प्रेस.

मुखर्जी, आर0के0 (1940). *मैन एण्ड हिज हैबिटेशन : ए स्टडी इन सोशल इकोलॉजी.* मिशीगन : यूनीवर्सिटी ऑफ मिशीगन.

यादव, के0 (2019क). ''मलिन बस्तियों में स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण व्यवहार : लखनऊ नगर क्षेत्र का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''. *शोध मन्थन, 10*(2): 748–754.

यादव, के0 (2019ख). ''मलिन बस्तियों में सामाजिक व स्वास्थ्य समस्यायें: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण''. *श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, 6*(9): 112–115.

यूनेस्को (1977). *इंडीकेटर्स ऑफ इनवायरमेंटल क्वालिटी एण्ड क्वालिटी ऑफ लाइफ.* पेरिस : यूनाइटेड नेशंस.

वर्मा, एस0 (2017). ''बरेली महानगर की मलिन बस्तियों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन''. *आई0जे0ए0आर0, 3*(3): 915–917.

साक्षी, बारो, एस0 एण्ड देशमुख, आर0 (2025). ''अर्बन रियलिटीज : ए जोनल लेवल एसेसमेंट ऑफ क्वालिटी ऑफ लाइफ इन लखनऊ सिटीज स्लम्स बेस्ड आन एक्सेस टू एमिनिटीज एण्ड प्रॉक्सिमिटी टू सर्विसेज''. *सिटी एण्ड बिल्ट इनवायरमेंट, 3*(8).

सेन, एस0एन0 (1960). *दि सिटी ऑफ कलकत्ता : ए सोशियो–इकोनॉमिक सर्वे, 1954–55 टू 1957–58.* कोलकाता : बुकलैण्ड प्रा0लि0.

सेनगुप्ता, ए0 (1980). ''हाउसिंग कंडीशन ऑफ दि पीपुल इन दि कलकत्ता मेट्रोपोलिटन डिस्ट्रिक्ट''. *जियोग्राफिकल जर्नल ऑफ इण्डिया, 269:* 196–208.

हैरिंग्टन, एम0 (1962). *दि अदर अमेरिका : पॉवर्टी इन दि यूनाइटेड स्टेट्स.* न्यूयार्क : मैकमिलन.